कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति



Satyaveer Yadav

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- 1972 तक पूर्वोत्तर का पुनर्गठन पूरा हो चुका था लेकिन स्वायत्ता की मांग खत्म न हुई।

उदाहरण :-

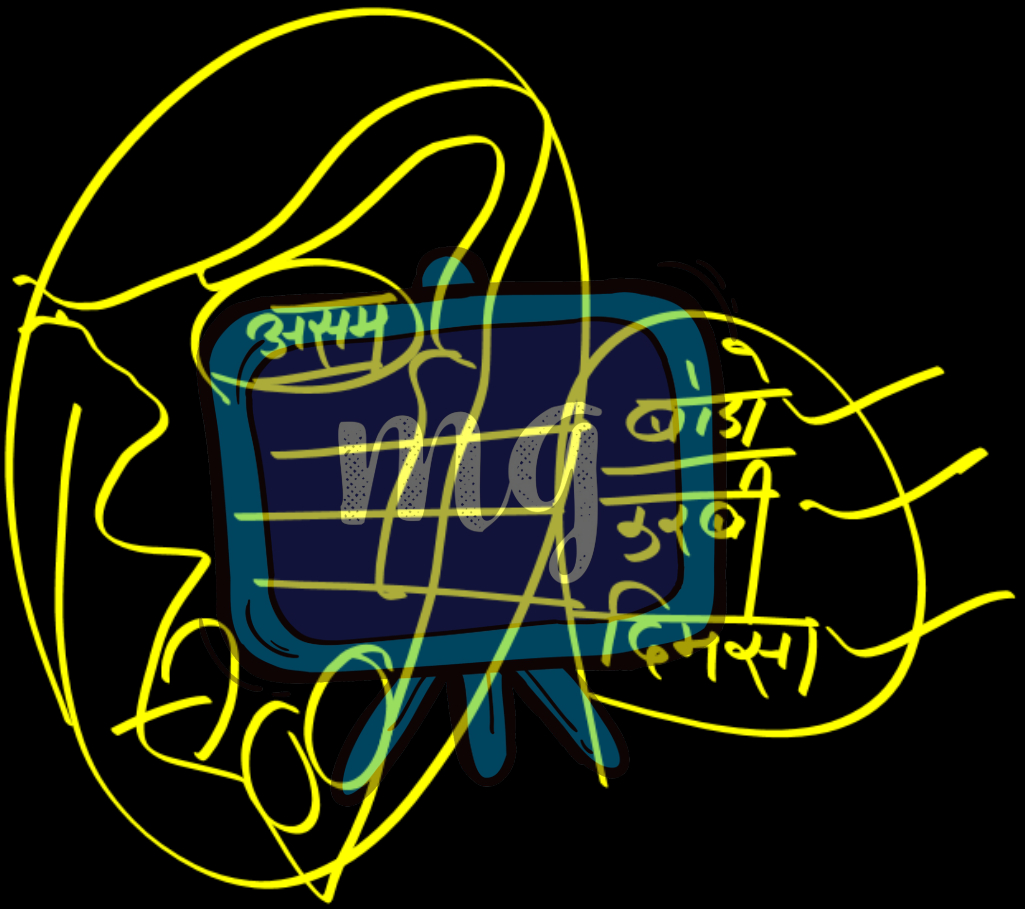
- असम के बोडो, करबी और दिमसा जैसे समुदायों ने अपने लिए अलग राज्य की मांग की।
- अपनी मांग के पक्ष में जनमत तैयार करने के प्रयास किये।
- जन आंदोलन चले विद्रोही कार्यवाहियां हुई।
- कई बार एक से ज्यादा समुदायों ने एक ही इलाके पर अपनी दावेदारी जतायी।

समस्या :-

- छोटे-छोटे और निरंतर लघुत्तर होते राज्य बनाते चले जाना संभव नहीं।

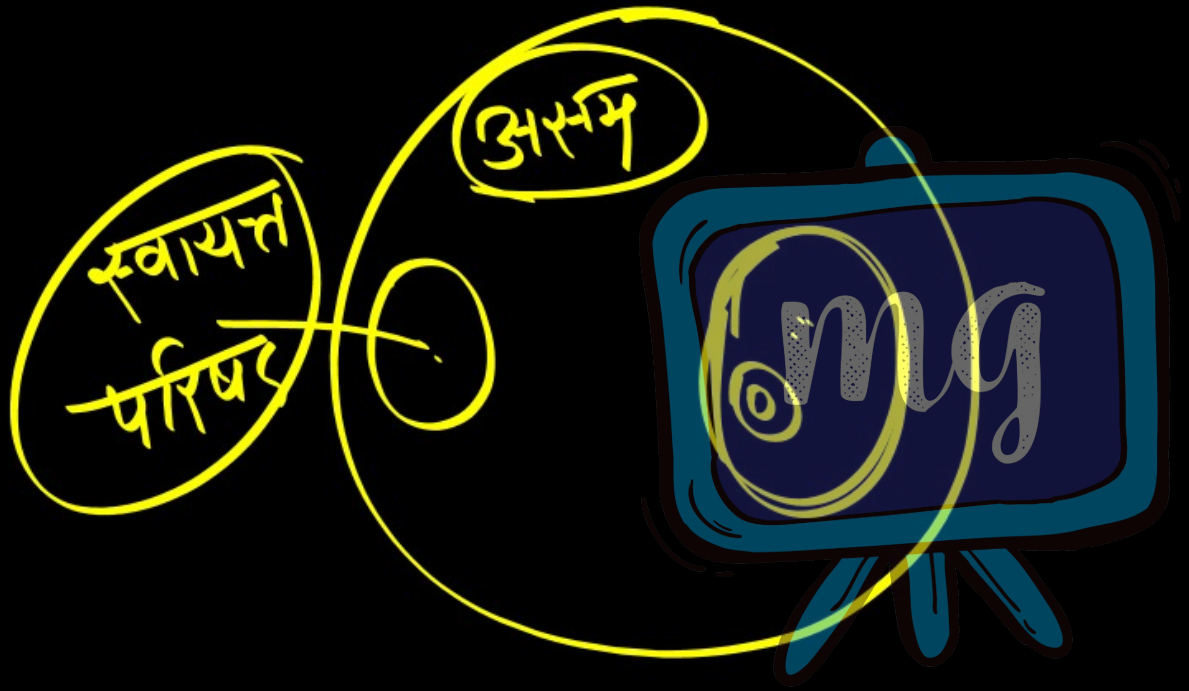
ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

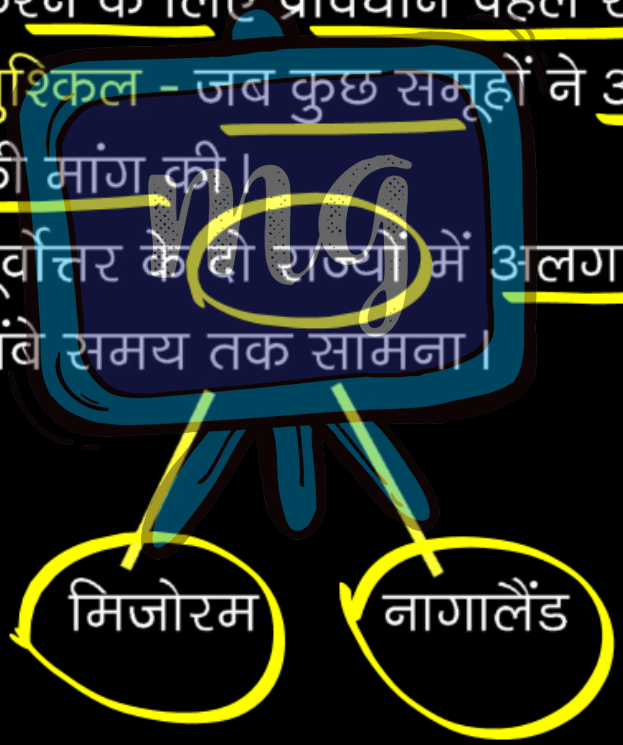


समाधान :-

- राजव्यवस्था के कुछ प्रावधानों का उपयोग करके स्वायत्ता की मांग को संतुष्ट करने की कोशिश की गयी।
- इन समुदायों को असम में ही रखा गया।
- करबी और दिमसा समुदायों को जिला परिषद् के अन्तर्गत स्वायत्ता दी गयी।
- बोड़ो जनजाति को स्वायत्त परिषद् का दर्जा दिया गया।

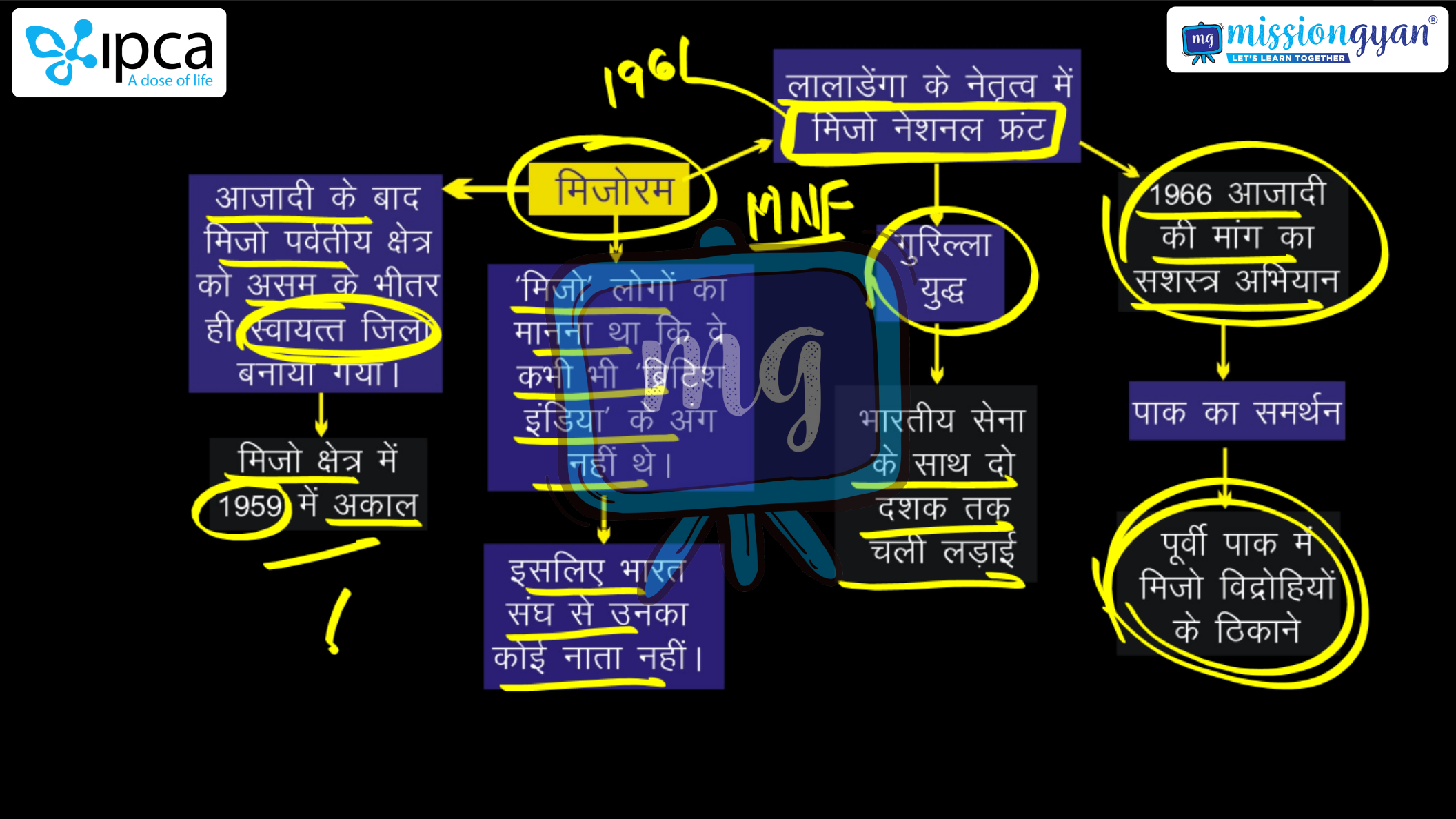

स्वायत्त
परिषद
असम

- स्वायत्ता की मांगों से निपटना आसान, क्योंकि संविधान में विभिन्नताओं का समाहार संघ में करने के लिए प्रावधान पहले से ही मौजूद।
- मुश्किल - जब कुछ समूहों ने अलग देश बनाने की मांग की।
- पूर्वोत्तर के दो राज्यों में अलगाववादी मांग का लंबे समय तक सामना।



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

समाधान :-

- दो दशकों तक चले बगावत में हर पक्ष को हानि उठानी पड़ी।
- इसी बात को भांपकर दोनों पक्षों के नेतृत्व ने समझदारी से काम लिया।
- पाकिस्तान में निर्वासित जीवन जी रहे लालडेंगा भारत आए और उन्होंने भारत सरकार के साथ बातचीत की। 1986 में लालडेंगा और राजीव गांधी के बीच एक शांति समझौता हुआ।
- समझौते के अनतर्गत मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा तथा कुछ विशेष अधिकार दिए गए।
- आज मिजोरम पूर्वोत्तर का सबसे शांतिपूर्ण राज्य है और उसने कला, साहित्य तथा विकास की दिशा में अच्छी प्रगति की है।